[illegible]

[illegible]

उपभोक्ता व्यवहार की व्याख्या के लिए प्रमुख तीन सिद्धांत दिए गए हैं :—

(1) मार्शल का उपयोगिता विश्लेषण
(2) हिक्स-एलेन का उदासीनता वक्र विश्लेषण
(3) सैम्युलसन का प्रकटित अधिमान सिद्धांत

[illegible]

उपयोगिता की परिभाषा :—

मानव की आवश्यकताएँ उसे वस्तु तथा सेवाओं के उपभोग के लिए प्रेरित करती हैं। जब कोई व्यक्ति किसी आवश्यकता को महसूस करता है तब वह वस्तु तथा सेवाओं का उपभोग करता है। इससे यह स्पष्ट है कि वस्तु या सेवाओं में मनुष्य की आवश्यकता की संतुष्टि करने की क्षमता होती है। वस्तु में पाए जानेवाले इसी गुण या शक्ति को उपयोगिता

कहा जाता है। वस्तु में मनुष्य की आवश्यकता की तृप्ति का जो गुण या क्षमता होती है वह उपयोगिता कही जाती है। उदाहरण के लिए, भोजन या भूख मिटाने की आवश्यकता की पूर्ति हम रोटी, चावल या अन्य सामग्री का उपभोग कर करते हैं। रोटी और चावल में भूख मिटाने की जो क्षमता है उसे उपयोगिता कहा जाता है। रोगी चिकित्सक के पास रोग के इलाज के लिए जाता है। यहाँ डॉक्टर की सेवा का उपयोग किया जाता है। इस प्रकार यह स्पष्ट है कि रोटी के उपभोग या डॉक्टर की सेवा में उपयोगिता है, क्योंकि इनमें उपयोगिता की संतुष्टि का गुण या क्षमता होती है। लेकिन, उपयोगिता तथा लाभदायकता एक नहीं होती। उपयोगिता तथा लाभदायकता में अंतर होता है। सामान्यतया उन्हीं वस्तुओं को उपयोगी माना जाता है जो लाभदायक हो। हानिकारक वस्तुओं को उपयोगी नहीं माना जाता। लेकिन अर्थशास्त्र में ऐसी धारणा नहीं है। यदि वस्तु मनुष्य की आवश्यकता की संतुष्टि करती है तो उसे अर्थशास्त्र में उपयोगी माना जाता है। उदाहरण के लिए, मदिरा, गाँजा-भाँग को हानिकारक माना जाता है। लेकिन यदि वस्तु हानिकारक होते हुए भी किसी व्यक्ति की आवश्यकता की पूर्ति करती है तो अर्थशास्त्र में उसे उपयोगी माना जाता है। शराब कुछ लोगों की जरूरत की पूर्ति करती है तथा यह उनके लिए उपयोगी होती है, तो अर्थशास्त्र में यह माना जाता है कि इसमें उपयोगिता है। इस तरह उपयोगिता का नैतिकता से कोई संबंध नहीं होता।

उपयोगिता आत्मगत एवं सापेक्ष होती है। उपयोगिता को ~~हम महसूस करते हैं~~ किसी वस्तु या सेवा का गुण है, जिससे मनुष्य की आवश्यकताओं की संतुष्टि होती है। किसी वस्तु की उपयोगिता को हम महसूस करते हैं। यह व्यक्तिविशेष की मनोदशा, अनेक तत्वों एवं परिस्थितियों पर निर्भर करती है। वस्तुविशेष की उपयोगिता अलग-अलग व्यक्तियों के लिए भिन्न हो सकती है, अतः उपयोगिता सापेक्ष होती है। उदाहरण के लिए, किसी श्रमिक के लिए उसके हँसुए-हथौड़े का महत्व किताब की उपयोगिता अधिक होती है।

उपयोगिता आवश्यकता की तीव्रता पर निर्भर करती है। उदाहरण के लिए, यदि वस्तु की आवश्यकता बहुत तीव्र हो तो उसकी उपयोगिता बहुत अधिक होती है। लेकिन ज्योंही आवश्यकता की तीव्रता घटती है, प्राप्त होनेवाली उपयोगिता भी घटती है। उदाहरणस्वरूप, जब हमें भूख लगी होती है तब पहली रोटी की उपयोगिता बहुत अधिक होती है लेकिन भूख मिटती जाती है, रोटी से प्राप्त उपयोगिता क्रमशः घटती जाती है।

इस त

Ajanta Oxford

Scanned with CamScanner

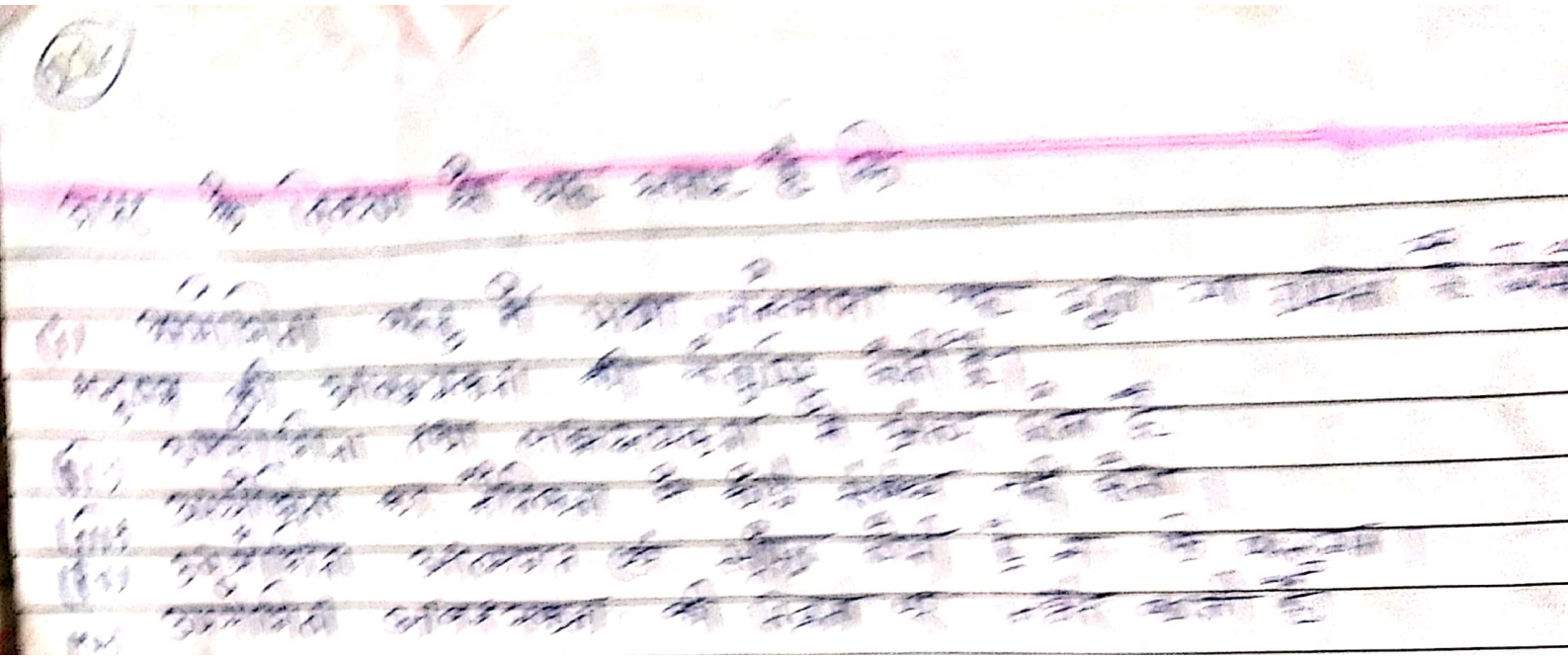

Scanned with CamScanner